International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

भारत में नारीवाद के विकास का चरण : सामाजिक व ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

अमित कुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

मनीषा धवन

छात्रा, MA, इतिहास, (द्वितीय वर्ष) देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

शोध संक्षेप

नारीवाद के बारे में सभी ने सुना होगा। मगर यह है क्या? इसके दर्शन और सिद्धांत के बारे में ज्यादातर लोगों को नहीं मालूम। इसे पूरी तरह जाने और समझे बिना नारीवाद पर कोई भी बहस या विमर्श बेमानी है। नव उदारवाद के बाद भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति आए बदलाव के बाद इन सिद्धांतों को जानना अब और भी जरूरी हो गया है। मेरे इस शोध में मैंने नारीवाद के विकास के विभिन्न ऐतिहासिक चरणों तथा उनके भविष्यगत पुष्टि व विकास के चरणों पर अनुसंधान करते हुए उसके आगामी स्वरूप की समीक्षा की है।

मुख्य शब्द – नारीवाद, सामाजिक इतिहास, महिला अधिकार, जेरेमी बैंथम

भूमिका

नारीवाद एक दर्शन है जिसमे समाज में नारी की स्थिति व उनमे परिष्कार की संभावनाओं का अवगाहन किया जाता है। नारीवाद ही वह विश्लेषण है जो बता सकता है की नारी सशक्तिकरण के लिए कौन-कौन सी रणनीति अपनाई जाय। महिला व पुरुष जीवन के दो आवश्यक अंग हैं लेकिन यह भी कटु सत्य है कि महिलाओं को अवसरों की उपलब्धता पुरुषों की तुलना में अत्यल्प है। नारीवाद इन कारणों के जड़ में जाने का उपागम है। इस पेपर में नारीवाद के सन्दर्भ में प्रचलित वैश्विक सिद्धांतों का विश्लेषण करना ही हमारा उद्देश्य है।

उदारवादी नारीवाद

पितृसत्तात्मकता के इतिहास में नारीवाद का उदारवादी पक्ष प्रायः उपेक्षित ही रहा है। उदारवादी नारीवाद वस्तुतः स्त्री-पुरुष समानता के सिद्धांत पर आधारित है जिसकी शुरुआत १८ वी सदी के शुरुआती दशकों में होने लगी थी। इस काल खंड में उदारवादी नारीवादियों ने आजादी व समानता के लोकतान्त्रिक मूल्यों व नारी अधीनता के बीच के अंतर्विरोध को उजागर किया गया है। स्वतंत्रता और न्यायिक समानता के मूल्य वस्तुतः नारी के जीवन के आधारभूत स्थिति से कहीं मेल नहीं खाते थे। आरंभिक उदारवादी नारीवादी मेरी वोस्टन क्राफ्ट ने इस विषय को पार्याप्त मजबूती दी।[1] 1792 ई। में लंदन से पहली बार प्रकाशित अपने लेख 'महिलाओं के अधिकारों का समर्थन' में उन्होंने महिला-अधिकारो के पुनर्संरचना की है। क्रिस्टीन डी पिजान ने नारी के लैंगिक मुद्दों पर अनूठे प्रश्न उठाए और इसी समय जेरेमी बैंथम की प्रसिद्ध पुस्तक 'Introduction to the Principles of Morals and Legislation' स्त्रियों को उनकी कमजोर बुद्धि का बहाना बना कर अधिकारों से वंचित करने की कई राष्ट्रों के प्रयासों की भरपूर आलोचना की। महिला सशक्तिकरण के पैरोकारों में मेरी वोलस्टोनक्राफ्ट, हैरियट टेलर, जान स्टुवर्ट मिल, बैट्टी फ्राइडन ग्लोरिया स्टेनम व रेबिका वाकर जैसे नाम शामिल हैं।

समाजवादी/मार्क्सवादी नारीवाद

नारी उत्थान के अनुत्तरित प्रश्नों में महिला पर निर्भरता तथा गुलामी के प्रश्न महत्वपूर्ण हैं। समाजवादी नारीवादियों ने इन प्रश्नों को मुखर किया है। मार्क्सवाद के सिद्धांत महिलाओं की स्थिति को आर्थिक आधार पर समझने का प्रयास करते रहते हैं। इनकी मूलभूत प्रवृतियों में पितृसत्तात्मकता का समर्थन या इन मूल्यों का महिमामंडन शामिल नहीं होता। ये दैनिक जीवन में दरपेश होने वाले ये नारीवादी पितृसत्तात्मकता का मखौल उड़ाने से भी गुरेज नहीं करते।

भारतीय महिलाओं का निचला तबका जिनमे मजदूर, खेतिहर और घरों में काम करने वाली अनेक महिला तादात शामिल है को समाजवादी नारीवादियों ने एकजुट करने का भरपूर प्रयास किया है। उन्होंने कृषक महिलाओं के जमीन से जुडी अधिकारों की मांगें भी उठाएँ हैं। बारबरा इहेंरिच ने अपने लेख 'समाजवाद क्या है?' में इस बात को सिद्ध किया है कि मार्क्सवाद और नारीवाद को मिला कर ही समाजवादी नारीवाद की विचारधारा विकसित हुई है।[2]

मार्क्सवादी नारीवाद उत्पादन के मुख्य उपादान के तौर पर प्रजनन को शामिल करता है और यह दर्शाता है समाजवादी नारीवादियों की समाज के बारे में सोच केवल अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं है। ये प्रजनन को उत्पादन की प्रक्रिया के तौर पर लेते हैं, इस उत्पादन की प्रक्रिया में नारी की प्रमुख भूमिका है लेकिन पितृसत्तात्मकता नारी को इसका मनचाहा अधिकार नहीं देती। पितृसत्तात्मकता प्रजनन पर अपना वर्चस्व स्थापित रखती है जिससे वह समाज व परिवार को प्रभावित कर सके। प्रजनन एक तरह से नारी पर आरोपित होता है। यौन कार्यों पर भी पुरुष का ही प्रत्यक्ष या परोक्ष अधिकार होता ही है। समाजवादी यह मानते हैं कि स्वतंत्र प्रजनन व यौन कर्म के लिए यौन शोषण को खत्म करना बहुत जरूरी है, यह तभी हो सकता है जब पूंजीवादी व्यवस्था व पितृसत्तात्मकता का अंत हो। पितृसत्तात्मकता तथा पूंजीवाद एक दुसरे के सहयोगी व पूरक हैं।

मार्क्सवादी नारीवाद की व्याख्या 'शिकागो वीमेंस लिबरेशन यूनियन' (1972) में की गई है जिसके अनुसार मार्क्सवादी नारीवादी मानते हैं कि पूंजीवादी व्यवस्था में पूंजीवादी वर्ग का वर्चस्व व दमन संस्थाओं के माध्यम से व्यवस्थित तरीके से सुनिश्चित किया जाता है।

रेडिकल नारीवाद

रेडिकल नारीवाद से तात्पर्य किसी उग्र संक्रिया की बजाय 'संपूर्ण ज्ञान' या 'जड़ तक जाने से' है। यह इस बात का विश्लेषण है कि समकालीन समाज में लिंग पर आधारित विभेद किस तरह पूरे जीवन की संरचना करते हैं। वस्तुतः यह पितृसत्तात्मकता के खिलाफ एकजुटता का एक प्रयास है और उस प्रभुत्व का विरोध है जिसे नारी सदियों ढोती रहने को विवश रही है। रेडिकल नारीवादी यहाँ एक अनूठे तथ्य को उद्दृत करते हैं कि पितृसत्तात्मकता हमेशा बेमानी ही नहीं रही है बल्कि पितृसत्तात्मकता के कारण ही महिलाओं ने भी 'नारी गुणों' की हकीकत को स्वीकार किया।[3] रेडिकल नारीवाद पुरुष संस्कृति के मूल्यों को चुनौती देता है और यह महिलाओं द्वारा पुरुषों के किए जाने वाले अनुकरण के न सिर्फ पूरी तरह खिलाफ है बल्कि यह महिलाओं में उन नए मूल्यों का सृजन चाहता है जिनकी जडें पारंपरिकता में समाहित हो।

आधुनिक सामाजिक व्यवस्था के समूची उत्पीडन श्रृंखला को रेखांकित करता है यह जिसमे कोई स्त्री अपना मूल्य अपनी उर्वरता की वजह से हासिल करने की बजाय यौन-आकर्षण से हासिल करती है। इस आधुनिक रेडिकल नारीवादी सिद्धांत के उदय में कुछ पुस्तकों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, जिनमें प्रथम पुस्तक सिमोन द बोऊवार की

'द सेकेंड सेक्स' थी। इसके साथ ही, शूलामिथ फायरस्टोन की पुस्तक द डायलेटिक्स ऑफ़ सेक्स में भी रेडिकल नारीवाद की अवधारणा का व्यापक विवरण दिया गया है।

पर्यावरणीय नारीवाद

रेडिकल नारीवाद जब विस्तार को उपलब्ध होता है तो वह पर्यावरणीय नारीवाद में परिवर्तित हो जाता है। इसके अनुसार परकृतिक कारक स्त्री अधीनता को पोषित करते हैं। पितृसत्तात्मकता का आधार लैंगिक शोषण है जिसने पुरुष और स्त्री के बीच स्वाभाविक जैविक भिन्नताओं पर जोर दिया है। यह धारा जोर देती है कि स्त्रियों में कुछ गुण जैसे, प्रकृति से निकटता, पालन-पोषण करने के गुण, जनवादी और इकठ्ठे रहने की भावना व शांति बनाए रखना निहित हैं । स्त्री का स्वभाव जहाँ समर्पण है वहीँ पुरुष का स्वभाव है दूसरों पर हावी होना, आक्रमण पुरुष गुण है तथा समर्पण स्त्री गुण। हिंसा अनिवार्यतः पितृसत्तात्मकता से निःसृत होती है। पर्यावरणीय नारीवाद ने पृथ्वी पर पितृसत्तात्मक प्रक्रिया के वर्णन द्वारा पर्यावरण के बारे में एक राजनीतिक समझ पैदा की है।[4]

अश्वेत नारीवाद

अश्वेत नारीवाद का मुख्य तर्क है कि वर्गीय, नस्लीय और लैंगिक शोषण परस्पर संबंधित है। सालों से नारीवाद की प्रचलित धाराओं ने लैंगिक-शोषण पर बात करते हुए नस्लीय वर्गीय-शोषण को लगातार नजरअंदाज किया हैं। इसके बाद, साल 1974 में कॉमबाही रिवर कलेक्टिव ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि अश्वेत स्त्री की मुक्ति के बाद ही पूरे मानव-समाज की मुक्ति संभव है। अश्वेत आंदोलन की आधारभूमि को तैयार करने में एलिस वॉकर केवुमेनिस्म के सिद्धांत का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

एलिस वाकर और अन्य नारीवादियों ने यह जाहिर किया कि अश्वेत स्त्री के जीवन अनुभव श्वेत और मध्यवर्गीय स्त्रियों की अपेक्षा न सिर्फ अलग हैं बल्कि उसके शोषण की परिस्थितियां भी अधिक जटिल हैं। अश्वेत स्त्री आंदोलन के उदय का कारण भी इसी तर्क पर आधारित है कि श्वेत मध्यमवर्गीय और पढ़ी-लिखी स्त्रियों ने नारीवाद की जिस धारा का नेतृत्व किया, उसमें वर्ग व नस्ल पर आधारित शोषण को तवज्जो नहीं दिया गया।

पेट्रिशिय हिल कॉलिन्सने ने अपनी महत्त्वपूर्ण कृति 'फेमिनिस्ट थॉट' में अश्वेत नारीवाद को परिभाषित करते हुए कहा कि 'इस नारीवाद को सैद्धांतिकी देती हुई विदुषियों ने साधारण अश्वेत स्त्री के अनुभवों और उसके विचारों को शामिल करते हुए एक अलग किस्म को दृष्टि अपने समुदाय और समाज के प्रति प्रदान की।'[5]

निष्कर्ष

पितृसत्तात्मक समाज में नारीवाद के विकास के भिन्न चरण आगामी जगत में न सिर्फ एक विकसित सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना की आधारशिला रखेंगे बल्कि नये इतिहास का भी सृजन करेंगे। इतिहास गवाह है की नारी स्थिति शोषण की पर्याय थी और है भी। इसकी स्थिति में बीसवीं सदी में उल्लेखनीय सुधार हुए हैं तथा इसकी स्थिति को शोध के दायरे में भी लाया गया है। तमाम शोधकार्यों के पश्चात आज हमारे पास क्रमबद्ध विश्लेषण उपलब्ध है कि नारी स्थिति के परिमार्जन के लिए अन्य संभावनाओं की तलाश एक निश्चित मुकाम पर पहुँच रही है।

रेफेरेंस

1. Hawkesworth, Mary E. (2006). *Globalization and Feminist Activism*. Rowman & Littlefield. pp. 25–27
2. Beasley, Chris (1999). *What is Feminism?*, New York: Sage, pp. 3–11
3. Echols, Alice (1989), *Daring to Be Bad: Radical Feminism in America, 1967–1975*, Minneapolis: University of Minnesota Press
4. Messer-Davidow, Ellen (2002), *Disciplining Feminism: From Social Activism to Academic Discourse*, Durham, NC: Duke University Pres
5. Chodorow, Nancy (1989), *Feminism and Psychoanalytic Theory*, New Haven, Conn: Yale University Press